सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् भारत रूस संबंध

डॉ. अजय चंद्राकर

विभागाध्यक्ष राजनिति विज्ञान विभाग

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भारत और रूस एक–दूसरे को समझने लगे है। दोनों देशों के बीच संबंधों में रक्षा का स्थान सबसे ऊपर है और व्यापार के मुद्दे दूसरे पायदान पर दोनों देशों के बीच संबंधों का कमजोर पक्ष है आपसी व्यापार का निम्न स्तर जो कि लगभग 4.5 अरब डॉलर मात्र है।

दिसंबर, 2011 में रूस का विश्व व्यापार संगठन के सदस्य बनना भारत के लिए सकारात्मक संकेत है। इससे दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ने में मदद मिलेगी। रूस का विश्व व्यापार संगठन में प्रवेश भारत के साथ द्विपक्षीय निवेश और व्यापार के लिए काफी अच्छा है। 21वीं शताब्दी के पहले दशक में दोनों देशों के संबंधों में घनिष्ठता देखी जा रही है। दोनो के संबंधों में सैनिक तकनीकी सहयोग तथा परमाणु ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल हुई है, हाइड्रोकार्बन व ऊर्जा के क्षेत्र में बहुत संभावनाएं है। दोनो देश ब्रिक तथा जी – 20 समूह के सदस्य है तथा कई अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों– जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार, आतंकवाद सुरक्षा परिषद व अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं आदि में दोनों के मध्य समान दृष्टिकोण पाया जाता है।

भारत एवं रूस के बीच पुनः सुधरते हुए रिश्तों से अमरीका काफी चिन्तित है। पहले उसने भारत को कायोजेनिक रॉकेट इंजन सप्लाई न करने के लिए रूस पर दबाव डाला था। उसने रूस द्वारा भारत को दो परमाणु रिएक्टर को बेंचान का विरोध भी किया था।

आज रूस के सामने अनेक समस्याएं और चुनौतियां है। उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, अमरीका और पश्चिमी देशों से उसे आर्थिक सहायता चाहिए।

नियन्त्रित अर्थव्यवस्था को बाजार अर्थव्यवस्था में बदलने की समस्या है, परमाणु शस्त्रों पर नियंत्रण के मुद्दे को लेकर उक्रेन से उसके मतभेद उभरे है। राजनीतिक एवं आर्थिक परेशानियां जितनी गम्भीर है, पूर्व सोवियत सैनिकों की भारी भरकम सेना तथा उसकी मानसिक स्थितियां उन परेशानियों से से भी ज्यादा गंभीर है। यह सेना आज रूस की ताकत नहीं वरन कमजोरी बन गई है । सोवियत सेना में रूसियों का वर्चस्व था, सैन्य अधिकारी तो सामान्यतः रूसी ही होते थे, परिणामतः अन्य गणराज्यों के हिस्से में जो सेनाएं आयी, वे उनकी आर्थिक व राजनीतिक हैसियत के अनुपात में है। रूस की सेना का आकार रूस की राजनीतिक व आर्थिक हैसियत से बहुत बड़ा है। अतः कल तक जो रूसी साम्राज्य की ताकत थी, वही आज उसकी बहुत बड़ी कमजोरी सिद्ध हो रही है, एक सैन्य अधिकारी के शब्दों में "पूर्व सोवियत सेना अब मध्ययुगीन चंगेजखान की सेना बन गई है, जिसका चरित्र है अराजकता।"

आज रूस का विरोध सभी देश कर रहे है जो या तो पूर्व सोवियत संघ का हिस्सा या जहां के प्रशासन पर सोवियत का प्रभाव था। गौरतलब है कि इन देशों पर अमरीका का खासा प्रभाव है। इन देशों को अमरीका की आर्थिक और सैन्य सहायता प्राप्त हो रही है। पूर्व सोवियत घटक देश एस्टोनिया की राजधानी में पिछले दिनों सोवियत युग के युद्ध स्मारको को हटा दिया गया। यह कदम रूस को भड़काने के लिए पर्याप्त था। गौरतलब है कि एस्टोनिया नहीं चाहता कि यूरोप और रूस की वार्षिक शिखर वार्ता की जाए दूसरी ओर पौलैण्ड ने यूरोप सहयोग समझौते में टांग अड़ा रखी है। इन देशों का कहना है कि रूस की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षाएं पुनः जाग्रत हो रही है, इतनी सारी कमियों के बावजूद भी रूस एक महाशक्ति है।

महाशक्ति की पहचान है– परमाणु क्षमता और दूर तक मार करने वाली मिसाइल का स्वामी होना। उसके पास अमरीका और यूरोप को नष्ट करने का सामान मौजूद है। महाशक्ति की दूसरी पहचान है संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में वीटो के अधिकार का होना। वीटो के रूप में रूस के पास राजनीतिक शक्ति है और परमाणु अस्त्र भण्डार के चलते उसमें अन्य देशों को नष्ट करने की क्षमता भी है। इस स्थिति में रूस की अनदेखी नहीं की जा सकती।

अप्रैल 1997 तथा जुलाई 2001 में सम्पन्न रूस– चीन समझौता संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा स्थापित की जा रही एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के लिए चुनौती है। होशीमोतो—

येल्तसिन शिखर वार्ता (नवंबर 1997) रूस– जापान संबंधों की एक बड़ी शानदार शुरूआत है। जापान ने वचन दिया है कि वह रूस को एशिया प्रशान्त आर्थिक सहयोग फोरम का सदस्य बनने में मदद देगा।

नाटो के विस्तार ने यूरोप में अमरीका की सैनिक स्थिति को ही मजबूत नहीं किया है। अपितु रूस की सैनिक घेराबन्दी को पूर्ण करके उसकी सुरक्षा के लिए भी संकट पैदा कर दिया है। आज रूस चारों तरफ से अमरीकी सैनिक अड्डो से घिर गया है तथा उसका हर क्षेत्र अमरीका के मारक हथियारों की हद में आ गया है। मार्च 2004 में नाटो में 7 नए राज्यों को शामिल करके नाटो अब रूस के दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। 2 से 4 अप्रैल, 2008 को नाटो ने रोमानिया की राजधानी बुखारेस्ट में अपनी शिखर वार्ता आयोजित की इसे बिडम्बना ही कहा जायेगा कि यह शिखर वार्ता उस देश में हुई जो शीत युद्ध के काल में सोवियत गुट का अभिन्न मित्र था । पिछली शिखर वार्ता नवम्बर 2006 में लाटविया की राजधानी रीगा में हुई थी।

यह कहा जा सकता है कि वर्तमान रूस एक गौरवशाली अतीत और आशंकित भविष्य के भंवर में फंस गया है। आर्थिक विशेषताएं उसे विश्व शक्ति युगीन अतीत में लौटने नहीं देगीं। आज रूस की अर्थव्यवस्था केवल प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है और अमरीका की अत्याधुनिक व्यावसायिक प्रौद्योगिकी का उसके पास कोई जवाब नहीं है। भविष्य इसलिए अनिश्चित और संदिग्ध है, क्योंकि अमरीका और नाटो उसकी घेराबंदी में लगे है। तेजी से घटती जनसंख्या ने उसे योग्य श्रम शक्ति से वंचित कर दिया है।

अगर रूस चाहता है कि उसे वैश्विक व्यवस्था में दोयम दर्जे का खिलाड़ी नहीं माना जाये तो अत्याधुनिक हथियारों के साथ ही उसे आर्थिक मुश्किलों पर विजय पानी होगी।

सुझाव:–

सुझाव में हम कह सकते है कि भारत और रूस हमेशा से ही एक दूसरे के सहयोगी रहे है और भविष्य में भी रहेगें । आज भी इन दोनो राष्ट्रों का संबंध बहुत अच्छा है। और आगे भी यह संबंध अच्छा ही होगा। जैसे

पुतिन से बोले मोदी, संकट के समय रूस हमेशा भारत के साथ रहा–

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान सभी देशों के राष्ट्र अध्यक्षों पर व्यापक प्रभाव छोड़ा। मोदी ने रूस के साथ रक्षा एवं ऊर्जा क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने की और रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन को आगामी दिसंबर में होने वाली उनकी वाली उनकी भारत यात्रा के दौरान कुडनकुलम परमाणु बिजली संयंत्र का दौरा करने के लिए आमंत्रित किया। मोदी और पुतिन ने यहां ब्रिक्स बैठक से इतर बीती रात 40 मिनट तक मुलाकात की। इससे पहले दोनो नेताओं की सोमवार की मुलाकात टाल दी गई थी, क्योकि पुतिन ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में व्यस्त थे। इस मुलाकात के दौरान पुतिन ने मोदी को आम चुनाव में मिली भारी जीत पर बधाई दी। साल 2001 में मॉस्को में पुतिन से मुलाकात करने वाले मोदी ने कहा कि रूस के साथ हमारा रिश्ता हर कसौटी पर परखा हुआ है तथा उन्होंने इस बात की सराहना की, कि दोनो देशो के बीच आजादी के पहले से मधुर संबंध है। प्रधानमंत्री मोदी ने हिन्दी मे बोलते हुए कहा, "अगर भारत में किसी बच्चे से पुछा जाये कि भारत का सबसे अच्छा दोस्त कौन है तो उसका जवाब रूस होगा, क्योंकि संकट के समय रूस हमेशा भारत के साथ रहा है।

साथ ही उन्होंने कहा कि भारत इस रिश्ते को आगे ले जाने को प्रतिबद्ध है और दोनो देशों के लोगो के बीच संपर्क के सथा परमाणु रक्षा एवं ऊर्जा क्षेत्रों में रणनीतिक साझेदारी को व्यापक बनाने पर जोर देने वाला है।"

प्रधानमंत्री ने कहा कि दोनो देशों के बीच उदार बीजा प्रणाली की जरूरत है और खासकर पढ़ाई के लिए जाने वाले छात्रों के संदर्भ में वीजा नीति उदार होनी चाहिए विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता सैयद अकबरूद्दीन के अनुसार राष्ट्रपति पुतिन ने स्वीकार किया कि इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है। मोदी ने सुझाव दिया कि इस साल दिसंबर में होने जा रहे वार्षिक शिखर बैठक संवाद के लिए भारत पहुंचने पर, पुतिन को दिल्ली से बाहर जाना चाहिए और परमाणु निर्माण स्थल का दौरा करना चाहिए। उनका इशारा कुडनकुलम – 2 संयंत्र की ओर था। प्रधानमंत्री के इस सुझाव पर पुतिन ने जवाब दिया, यह एक अच्छा विचार है। मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर रूस के आस्त्राकान क्षेत्र के अपने दौरे को याद किया। उन्होंने कहा कि उन्हे इस दौरे पर ऐसा लगा कि वह भारत में है। पुतिन ने कहा कि रूस

भारत के साथ अपने रिश्ते को रणनीतिक रूपरेखा में काफी ऊपर रखता है। परमाणु ऊर्जा, परियोजना भारत रूस संबंधों का प्रतीक रही है। मोदी ने ब्रिक्स बैठक में पुतिन के भाषण की तारीफ करते हुए कहा कि इसमें संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संगठनों में सुधार जैसे मुद्दो का स्पष्ट उल्लेख था ।

चुनौती है भारत – रूस दोस्ती :–

अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ बढ़ते तनाव के बीच रूसी राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन का भारत दौरा हो रहा है। कुलदीप कुमार का कहना है भू–राजनीतिक स्थिति में बदलाव का असर भारत और रूस के रिश्तों पर भी पड़ेगा। भारत और रूस के घनिष्ठ संबंध में जगजाहिर है। जब जुलाई में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन से ब्राजील में मिले, तो मिलते ही उन्होंने पुतिन से कहा कि भारत का हर बच्चा जानता है कि रूस भारत का सबसे अच्छा दोस्त है, अब पुतिन प्रतिवर्ष होने वाली भारत– रूस शिखर वार्ता के लिए नई दिल्ली में हैं।

बृहस्पतिवार को मोदी के साथ उनकी द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाईयों तक ले जाने के उद्देश्य से विस्तृत बातचीत हुई। और दोनों देशों के बीच पन्द्रह बीस समझौतो पर भी हस्ताक्षर हुए। लेकिन भारत की राह अब उतनी आसान नहीं रह गई है। जितनी कभी हुआ करती थी, यह रूस दोस्ती दोस्ती 1950 के दशक के मध्य से शुरू होकर 1980 के दशक के अन्त तक लगातार परवान चढ़ती रही क्योंकि उस समय पुरी दुनिया शीतयुद्ध के चपेट में थी, भारत के चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध खराब हो रहे थे, चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा हो गया था। और रूस एवं चीन के संबंधों में लगातार तनाव आ रहा था, उस समय दुनिया में अमेरिका और रूस दो ही महाशक्तियां थी, लेकिन आज स्थिति बहुत भिन्न है।

आज चीन अमेरिका के बाद दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति है, आर्थिक स्पर्धा के बावजूद उसके अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध बहुत अच्छे है, वह आज भी पाकिस्तान के साथ है, यही नही वह दक्षिण एशिया क्षेत्र के सभी देशों के साथ अपने संबंध गहरे बनाता जा रहा है, उधर रूस और अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी देशों के खेमे के बीच एक बार फिर लगभग शीतयुद्ध की स्थिति पैदा हो गई है। कीमिया के मसले पर

रूस के खिलाफ प्रतिबंध लगाये जाने के बाद उसकी मुश्किले बढ़ती जा रही है, रूस के लिए चीन का दामान पकड़ना एक मजबूरी बनती जा रही है। उधर भारत के भी अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ संबंध सुधरे है। यानि विश्व की भू–राजनीतिक परिस्थितियों में भारी बदलाव आया है।

इस पृष्ठभूमि में यह स्वाभाविक है कि भारत रूस के संबंध भी बदले, अब रूस चीन को भी वैसे ही हथियार और सामरिक तकनीकी देने को राजी है। जिन्हे वह कभी केवल भारत को ही दिया करता था, वह पाकिस्तान को भी हेलिकाप्टर बेचने की सोच रहा है, आज भी वह भारत को सबसे अधिक हथियार सप्लाई करने वाला देश है। लेकिन इस पिछले दो दशकों के दौरान भारत में इजराइल आदि देशों से भी हथियार खरीदना शुरू कर दिया है, यदि रूस और अमेरिका एवं अन्य पश्चिमी देशों के बीच तनाव बढ़ता गया और रूस चीन एवं पाकिस्तान के नजदीक आता गया, तो भारत के लिए मुश्किलें पैदा हो सकती है।

भारत और रूस के सामने सबसे बड़ी चुनौती है पारस्परिक व्यापार को बढ़ाना, इस समय दोनों देशों के देशों के बीच प्रति वर्ष होने वाला व्यापार सिर्फ छह अरब डॉलर का ही है जो रूस और चीन के बीच होने वाले व्यापार का पन्द्रहवां हिस्सा भी नहीं है, भारत के भी कुल विदेश व्यापार का यह मात्र एक प्रतिशत है, रूस दुनिया का प्रमुख तेल निर्माता देश है और उसके पास प्राकृतिक गैस के प्रचुर भंडार है। आशा की जा रही है कि राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच वार्ता के बाद गैस पाइपलाइन के बारे में किसी समझौते की घोषणा की जाए, दोनो देशों के बीच आर्थिक संबंध केवल हथियारों की खरीद–फरोस्त तक सीमित नहीं रह सकता, ऊर्जा, रक्षा और उच्च तकनीकी, इन तीनों क्षेत्रों में यदि दोनों देश अपने सहयोग को नई ऊंचाई देने में सफल होते है तो उनकी दोस्ती के उज्जवल भविष्य के बारे में आश्वस्त हुआ जा सकता है। अफगानिस्तान से नाटो सेनाओं की वापसी के बाद उस देश के बारे में रूस और भारत को अपनी नीतियां ऐसी बनानी होगी ताकि वहां राजनीतिक स्थिरता बढ़े और आतंकवाद पर लगाम लगे, यदि ऐसा हुआ तो इससे अमेरिका और पश्चिमी देश खुश ही होंगे।